Md. Ehtesham Khan

राजनीति का समाजशास्त्र एवं राजनीतिक समाजशास्त्र : विभेद करें (1)

Sociology of Politics and Political Sociology : Differentiate

परिचय — राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में राजनीतिक समाजशास्त्र का उदय एक महत्वपूर्ण घटना है। कारण यह है कि राजनीति विज्ञान जिसका कार्य राजनीतिक समस्याओं का समाधान ढूंढना था, जब नाकाम हो गया तो समाज की पृष्ठभूमि में राजनीति का अध्ययन होने लगा। यह कार्य इतनी तीव्र गति के साथ हुआ कि समाज विज्ञानों के परम्परागत पितामह राजनीति विज्ञान के लिए खतरा पैदा हो गया। 1927 में George Catlin ने दुख और इजहार करते हुए लिखा कि "ऐसा खतरा पैदा हो गया है कि कहीं राजनीति का एक उप-विभाग के रूप में समाजशास्त्र में विलय न हो जाय।" इसलिए जब हम Lipset, W.J.M. Mackenzie, Rose आदि को पढ़ते हैं तो अक्सर भ्रम में पड़ जाते हैं कि हम समाजशास्त्र को पढ़ रहे हैं या राजनीति विज्ञान को। सच है कि राजनीतिक समाजशास्त्र अपनी प्रारम्भिक अवस्था में Sociology of religion की तरह Sociology of Politics ही था, जिसमें राजनीति को आश्रित चर माना जाता था। इटालियन राजनीतिक वैज्ञानिक Giovani Sartori ने इसपर कड़ी आपत्ति करते हुए राजनीति की स्वायत्तता की बात कही तथा राजनीतिक समाजशास्त्र को समाज तथा राजनीति के मिलन बिन्दु पर उत्पन्न होनेवाला विषय माना। वैसे अभी भी राजनीतिक समाजशास्त्र अपनी बाल्यावस्था में ही है।

राजनीति का समाजशास्त्र एवं राजनीतिक समाजशास्त्र

राजनीति का समाजशास्त्र और राजनीतिक समाजशास्त्र के सम्बन्ध में स्वाभाविक रूप से मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता है कि क्या ये दोनों समानार्थी हैं अथवा इनमें अन्तर है? यदि अन्तर नहीं है तो अलग-2 नामकरण क्यों?

इस सम्बन्ध में वास्तविकता यह है कि राजनीतिक समाजशास्त्र अपनी प्रारम्भिक अवस्था में राजनीतिक व्यवहार और संस्थाओं का सामाजिक आधार के रूप में अध्ययन करने लगा।

अर्थात राजनीतिक चरों को समाजशास्त्रीय चरों पर आश्रित समझा जाने लगा। इस धारणा को ही Sociology of Politics कहते हैं। यह शब्द स्पष्ट संकेत देता है कि यह समाजशास्त्र की अन्य शाखाओं की तरह ही एक शाखा है। इस सम्बन्ध में G. Sartori ने लिखा है कि Marx ने Sociology of Politics की आधारशिला तभी रख दी थी जबकि उसने सामाजिक वर्ग की अवधारणा को सामाजिक और राजनीतिक यथार्थताओं की व्याख्या और विश्लेषण के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्त्य के रूप में पेश किया।

दूसरी तरफ Political Sociology राजनीति का निर्धारण एवं उसकी व्याख्या केवल समाजशास्त्रीय संदर्भों में ही नहीं करता, वरन् राजनीतिक संदर्भों में भी करता है तथा इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों में सामाजिक एवं राजनीतिक दोनों ही के तत्वों, कारकों, चरों व परिवर्त्यों का समन्वित सदुपयोग रहता है। इस प्रकार राजनीतिक समाजशास्त्र के अन्तर्गत समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र दोनों ही समान स्तरों पर एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं।

इस सम्बन्ध में स्मरणीय है कि S.M. Lipset ने Bendix के साथ जो संयुक्त लिखा उसमें राजनीति को समाजशास्त्रीय तत्वों से प्रभावित माना। उसके शब्दों में, "Political Sociology as a subject, ~~which~~ starts with society and examines how it affects the state." (The Field of Political Sociology) (राजनीतिक समाजशास्त्र एक विषय के रूप में समाज से उद्गम होकर इस बात का परीक्षण करता है कि वह राज्य को किस प्रकार प्रभावित करता है)

Maurice Duverger ने इस विवाद को खत्म करना चाहा और राजनीतिक समाजशास्त्र तथा राजनीतिक समाजशास्त्र को समानार्थी बताया। लेकिन Giovani Sartori के विचारों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। उनके अनुसार राजनीति का समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक उप-शाखा है, जिसमें राजनीतिक समस्याओं को सामाजशास्त्रीय तत्वों के आधार पर समझने का प्रयास किया जाता है, इसलिए इसे हम राजनीति का समाजशास्त्रीय रूपान्तरण (sociological reductionism of politics) कह सकते हैं।

Giovani Sartori आगे लिखते हैं कि राजनीतिक समाजशास्त्र का जन्म उस संगम पर होता है, जब समाजशास्त्रीय और राजनीतिक उपागम मिलते हैं। (Political sociology is only born, when the sociological and political approaches are combined at their point of interaction).

पुनः उनके अनुसार, "वास्तविक अर्थ में राजनीतिक समाजशास्त्र दोनों अनुशासनों के संयोग का परिणाम है, जोकि व्यापक धरातल पर ऐसे मॉडलस का निर्माण करने का प्रयास करता है, जो कि अपने निर्माणक स्रोतों के दिए तत्वों का (चरों का) परिवर्त्यों के रूप में पुनः व्याख्या करने का प्रयत्न करता है।" (A real Political Sociology is then, a cross-disciplinary breakthrough seeking enlarged models, which reintroduce as variables the givens of each component source). और G. Sartori के अनुसार यही वास्तविक राजनीतिक समाजशास्त्र है।

बाद में, S. M. Lipset ने भी राजनीतिक समाजशास्त्र को राजनीति का समाजशास्त्र से अलग माना और लिखा कि - "राजनीतिक समाजशास्त्र, समाज और राजनीति के बीच अंतर्निहित सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक संस्थाओं के बीच के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करता है।" (Political sociology is the study of the interrelationship between society and polity, between social structures and political institutions)

उपर्युक्त अन्त में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि राजनीति का समाजशास्त्र तथा राजनीतिक समाजशास्त्र के मध्य अन्तर के सम्बन्ध में Giovani Sartori के विचार आज अधिक मान्य होते जा रहे हैं। भले ही राजनीति का समाजशास्त्र अपने अनुसंधान साधनों के कारण काफी प्रभावशाली हो गया है, पर वह राजनीतिक समाजशास्त्र कहलाने का हकदार नहीं है।

=